International Journal of Research in Special Education

E-ISSN: 2710-3870
P-ISSN: 2710-3862
IJRSE 2021; 1(1): 32-34
© 2021 IJSA
www.rehabilitationjournals.com
Received: 17-11-2020
Accepted: 27-12-2020

Durgesh Kumar
Assistant Professor, Sanskrit University Mathura, Uttar Pradesh, India

Dr. Behzad Maqbool
Associate Professor, Amity University Noida, Uttar Pradesh, India

Manoj Kumar
Assistant Professor, RVM College of special education, Sonipat, Haryana, India

Corresponding Author:
Durgesh Kumar
Assistant Professor, Sanskrit University Mathura, Uttar Pradesh, India

श्रवण बाधित बच्चों की शैक्षिक, एंव सामाजिक समस्याए

Durgesh Kumar, Dr. Behzad Maqbool and Manoj Kumar

सारांश
दिव्यांगता के कारण व्यक्ति शारीरिक एंव सामाजिक क्रियाओं सम्बन्धी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम भागीदारी पाता है। इस प्रकार दिव्यांग व्यक्ति के भौतिक शारीरिक, मानसिक स्थितियों और उससे सम्बन्धित क्रियाकलापों से उत्पन्न एक प्रकार की सामाजिक स्वरूप की वह हानि है, जो किसी क्षति के उपरान्त व्यक्ति की आयु, लिंग एंव सामाजिक शैक्षिक एंव रोजगार स्तर के अनुरूप कार्य करने में बाधा पहुँचाती है। अक्षमता के कारण यदि व्यक्ति का कार्य या शिक्षा प्रभावित होती है, तो वह दिव्यांगता कहलाती है। असमसर्थता के कारण अपनी आयु, लिंग व सामाजिक भागीदारी के सापेक्ष एक या एक से अधिक क्रियाओं को न कर पान में कठिनाई को दिव्यांगता कहते है। दिव्यांगता व्यक्ति की भौतिक, शारीरिक और सामाजिक स्थितियों के साथ–साथ उससे सम्बन्धित क्रिया–कलापों से उत्पन्न एक प्रकार का सामाजिक स्वरूपता है। जिसका आकंलन व्यक्ति के सामाजिक एंव शैक्षिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है, जो स्थान, स्मय, परिस्थिति तथा सामाजिक शैक्षिक भूमिका से भी सम्बन्धित हो सकती है। आर्थात दिव्यांगता वह दशा है, जो क्षति एंव अक्षमता के कारण उत्पन्न शारिरिक एंव मानसिक क्रियाओं सम्बन्धी भूमिकाओं को सामान्य व्यक्तियों की तुलना में निर्वाह करने में बाधक होती है। अतः दिव्यांगता का सामाजिम शैक्षिक स्वरूप वातावरण का परिलक्षित करता है.

कूट शब्द: श्रवण बाधित, दोष, कार्यात्मक क्षमता विधार्थी, सामाजिक शैक्षिक समस्या।

1. प्रस्तावना
श्रवण बाधित का अर्थ सुनने में किसी प्रकार का दोष होना चाहे वह वंशानुगत के कारण या कान के किसी भागके खराबी के कारण से हो अथवा वातावरणीय कारणों से भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में जब कोई व्यक्ति या बाल सामान्य वातावरण में उपस्थित ध्वनि या आवाज को अपने कान के किसी अंग में खराबी के कारण सामान्य वातावरण की अवाजों को सुनने में असमर्थ होता है तो उसे हम श्रवण बाधित का नाम देते है।

1.1: श्रवण बाधित बालक
सुनने की क्षमता में कमी किसी को भी हो सकती है। चूंकि यह एक न दिखाई देने वाली अक्षमता है। इसलिए इस ओर माता–पिता तथा शिक्षको का ध्यान सहज ही नही जाता सुनने की अक्षमता के कारण बच्चा परिवेश की ध्वनि नियमों में संचार से वंचित रहता है। उसे वे सभी अधिकम अनुभव प्राप्त नहीं हो पाता जो एक सामान्य ढंग से सुनने वाले बच्चे को मिलता है।

1.2 परिभाषा
यूनेस्कों की विशेषज्ञ कमेटी 1985 ने श्रवण अक्षमता को परिभाषित करते हुये कहा कि–''श्रवणबाधित बच्चे वैसे होते हैं जिनमें अत्यधिक श्रवण अक्षमता ह्रास के चलते स्वाभाविक वाणी और भाषा का विकास पूर्णतः नही हुआ हो।''
[To be considered as deaf are those children whose spontaneous speech and language development have been very much retarded or completely absent, due to their severe hearing impairment (UNESCO, 1985)
निःशक्त जन अधिनियम 1995 की धारा 2(D) के अनुसार श्रवण शक्ति का ह्रास से अभिप्राय है संवाद सम्बन्धी रेंज की आवृति के बेहतर कर्ण में साठ डेसिबल या उससे अधिक का हानि।
[Hearing Impairment means loss of sixty decibels of more in the better ear in the conversational ranges of frequencies. PWD Act 1995: S. 2(I)]

आइडिया (IDEA) 1983 के अनुसार: ''बधिर व्यक्ति उसे कहा जाता है, जिसकी श्रवण संवेदना गम्भीर रूप से क्षतिग्रस्त हो, तथा श्रवण यंत्र की सहायता या श्रवण यंत्र के बिना भाषायी सूचना को ग्रहण करने में अक्षम होता है।''

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसारः ''मानव के उसके तरीके तथा विभिन्न प्रकार की क्रियाओं चाहे वह क्षतिग्रस्ता अथावा अक्षमता हो, उसके विभिन्न प्रकार की कमियों के आधार निर्धारण की जा सकती है।

भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI) 1992 के अनुसारः ''जब बधिरता 70 डेसिबल हो तो व्यवसायिक तथा जब बधिरता 55 डेसिबल हो तो उसे शिक्षा के लिए प्रयोग में लाना चाहिए।

1.3: श्रवणबाधिता का वर्गीकरण

श्रवणबाधित का वर्गीकरण हम दो प्रकार से कर सकते हैं

1 डिग्री के अनुसार गम्भीता के आधार पर। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) के अनुसार वर्ष 1983

0–25 dB- सामान्य (Normal)

26–40 dB- अतिअल्प (Mild)

41–55 dB. अल्प (Moderate)

56–70 dB- अल्पतम (Moderately)

71–90 dB- गम्भीर (Severe)

91–dB- अतिगम्भर (Above Profound)

(i) 0–25 कठ सामान्य (Normal) इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे की श्रवण शक्ति सामान्य होती है, एंव किसी प्रकार की आवाज को सुनने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इसमें छोटे बच्चे भी आसानी से वाणी एंव भाषा का विकास कर लेते हैं।

(ii) 26–40 कठ अतिअल्प (Mild)- इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे किसी भी आवाज को सामान्य की तरह सुन सकता है, परंतु कभी–कभी धीमी व पतली आवाजों को सुनने में परेशानी होती है। ऐसे बच्चों को वाणी वाचन कराकर वाणी एंव भाषा सिखाया जा सकता है और छोट बच्चे वाणी एंव भाषा आसानी से सीख लेते है।

(iii) 41–55 कठ. अल्प (Moderate)-इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे को सुनने में कुछ ज्यादा कठिनाई होती है। वह किसी बड़े हाल में बैठा हो या एक साथ चार–पांच लोगों की आवाज के बीच किसी की आवाज सुनने में दिक्कत होती है। इसमें छोटे बच्चे की वाणी एंव भाषा का विकास अवश्य ही पीछे छूट जाता है, इसलिए उसका विशेष ध्यान देना पड़ता है।

(iv) 56–70 कठ. अल्पतम (Moderately Severe)- इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चा बिना श्रवण यंत्र के आसानी नहीं सुन सकता है। छोटे बच्चों में शुरू में श्रवण यंत्र लगाना जरूरी हो जाता है तभी वाणी एंव भाषा का विकास सम्भव हो पाता है। इसके साथ–साथ बच्चे की बेहतर वाणी एंव भाषा विकास के लिए विशेष वाणी चिकित्सा एंव विशेष विधालय की मदद ली जा सकती है।

(v) 71–90 कठ. अल्प (Severe)- इस प्रकार के श्रवण दोष में व्यक्ति/बच्चे पूरी तरह श्रवण यंत्र पर आश्रित होते है, बिना श्रवण यंत्र के उसे किसी प्रकार की सामान्य आवाज सुनाई नहीं देती है। छोटे बच्चे पूरी तरह से श्रवण यंत्र पर आश्रित होते है। इसलिए उनकी वाणी एंव भाषा का विकास पूरी तरह से श्रवण यंत्र पर आश्रित होता है।

(vi) 90 कठ. से उपर अति गम्भीर (Profound)- इस प्रकार के श्रवण दोष में बच्चे एंव व्यक्ति के लिए श्रवण यंत्र ही मात्र उपाये है।इसकी के द्वारा ही शब्दिक भाषा का सम्प्रेषण हो सकता है।

श्रवण दोष के प्रकार– श्रवण दोष मुख्यतः 5 प्रकार के होते है जो निम्न है

1: कंउक्टिव श्रवण

बाहय कर्ण अथवा मध्य कर्ण मे किसी प्रकार का विकार होने से ध्वनियों को अन्तः कर्ण तक संचालित होने में अवरोध उत्पन्न होता है। यह दोष बाहरी अथवा मध्य कर्ण तक ही सीमित रहता है। अन्तः कर्ण बिल्कुल सामान्य स्थिति में रहता है। इस प्रकार श्रवण क्षमता ह्रास वाले व्यक्ति साधारण तथा धीमी आवाज में बात करते है लेकिन यदि ध्वनि की तीव्रता को बढ़ा दिया जाता है तो उनकी वाक और भाषा प्रभावित होती है। कभी–कभी बच्चे में बाहय श्रवण नलिका का निर्माण ही नही होता है इस स्थिति को एट्रिसिया कहा जाता है।

2: सेन्सरी न्यूरल श्रवण ह्रास

यदि श्रवण क्षमता का ह्रास अन्तः कर्ण अथवा नर्व पथ में जो आता है अतः कर्ण से नर्व पथ तथा मस्तिष्क सिस्टम तक रास्ते किसी बीमारी के कारण उत्पन्न हो उसे सेन्सरी न्यूरल Hearing loss अथवा श्रवण अक्षमता कहते है। इसमें बाहच तथा मध्य कर्ण सामान्य अवस्था में रहता है। तथा ध्वनि संचालन अन्तःकर्ण के द्रव्य का सही प्रकार से होता है किन्तु उसका सही ढंग से विश्लेषण तथा प्रोसेस नहीं हो पाता है।ण

3: मिश्रित श्रवण ह्रास

कई बार एक व्यक्ति में कन्डक्टिव तथा सेन्सरी न्यूरल दोनों प्रकार के श्रवण दोष होते है, जिसे मिक्सड हीयरिगं लौस कहते है। इसमें बाहरी कान, मध्य कान, एंव अन्तः कान में खराबी होती है। कान के तीनों भागों में विकृतियॉ उत्पन्न हो जाती है।

4: केन्द्रीय श्रवण ह्रास

सेरेब्रल कार्टेक्स से सटे ब्रेन स्टेम के बीच के श्रवण पथ सवंमित हो जाने से केन्द्रीय श्रवण ह्रास होता है। इसमें चिकित्सकीय हस्तक्षेप एंव श्रवण यंत्र से विशेष लाभ नहीं मिलता है। इसमें स्पीच थीरेपी कारगर साबित होता है।

5: कार्यात्मक श्रवण ह्रास

इसमें कान के किसी भाग में कोई गड़बड़ी नहीं होती है। व्यक्ति की श्रवण क्षमता तो पूर्णतः ठीक होता है लेकिन वह सुनकर भी न सुनने का अभिनय करता है। किसी भी आवाज के प्रति यह कोई प्रतिक्रिया नहीं करता है।

1.4- भाषा विकास के आधार पर (Language Development of Hearing Loss)

भाषा विकास के आधार पर श्रवण दोष को 2 प्रकार से विभाजित किया गया है।

(i) भाषा विकास पूर्व श्रवण दोष (Pre-Lingual of Hearing Loss)- इस प्रकार के श्रवण दोष में बच्चे के वाणी एंव भाषा विकास की आयु से पूर्व दोष उत्पन्न होता है। उसे भाषा विकास पूर्व श्रवण दोष कहते है।

(ii) पश्च भाषा विकास श्रवण दोष (Post-Lingual of Hearing Loss)-इस प्रकार क दोष बच्चे में जब वाणी एंव भाषा विकास पूरी तरह हो जाने के बाद होता है। उसे पश्च भाषा विकास श्रवण कहते है।

1.5 शैक्षिक एंव सामाजिक समस्याएं

समायोजन प्रत्येक मनुष्य के जीवन से जुड़ा हुआ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है। एक साधारण मजदूर से लेकर एक

विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति सभी के लिए अच्छा समायोजन होना जरूरी होता है।

1. **अविश्वास–** सामान्य व्यक्तियों की भॉति श्रवण बाधिरों में अपनी विकलांगता के कारण अविश्वास की उत्पत्ति हो जाती है तथा इसी कारण उनकी कई प्रकार की मनोसामाजिक समस्या उत्पन्न होती है।

2. **शर्म–** समाज में सामान्य व्यक्तियों की तुलना में इन लोगों की क्रियाशीलता परिपक्व नहीं होती है जिस कारण इन्हें शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है। यह इनकी मनोदशा का प्रभावित करता है।

3. **हीन भावना–** श्रवण बाधिरों में हीन भावना विधमान होती है क्योंकि कहीं न कहीं ये सामान्य व्यक्तियों से दुरी बनाकर रखते है तथा श्रवण बाधित समाज में रहना प्रसन्द करते है क्योकि सामान्य व्यक्तियों के साथ समायोजन में कठिनाईयों के साथ हीन भावना उत्पन्न होती है।

4. **पृथक अलगाव–** श्रवण बाधित को अपने समुदाय के लोगों से अधिक लगाव होता है तथा सामान्य लोगों से स्वयं को अलग रखते है। समप्रेषण न हो पाना भी बाधितों के सामान्य व्यक्तियों से अलगाव का मुखय कारण है।

5. **निराशा–** श्रवण बधितों में निराशा का उत्पन्न होना सामान्य है वे अधिक समय निराशा में ही व्यतीत करते है क्योंकि समाज के अन्य कारक उन्हें उनकी विकलांगता का जाने–अन्जाने मे ही महसूस करवाते है जिससें उन्हें इस कारण निराशा का सामना करना पड़ता है।

भारत की जनगणना 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में विभिन्न दिव्यागताओ से गृसित कुल व्यक्तियो कि संख्या 4157514 है। जो प्रदेश की कुल जनसख्या का 2.21 प्रतिशत है। प्रदेश मे गृामीण एंव शहरी क्षेत्रो मे दिव्यांगता से गृसित विवरण निम्नवत है–

कुल दिव्यागं = 4157514 है।
जिसमें से पुरूष दिव्याग = 2364171
महिला दिव्यागं = 1793343
इन मे केवल उत्तर प्रदेश के कुल श्रवण दिव्यागं
जनो की संख्या = 753704
गृामीण क्षेत्रो मे पुरूष दिव्यागं = 398665
महिला = 355039
कुल = 274131
शहरी क्षेत्र मे पुरूष = 146514
महिला = 127617 (2011)
गृामीण+शहरी कुल संख्या = 102783
आयु वर्ग 01–15 = 24515
15–30 = 40814
2011 के अनुसार कुल = 65329
प्राप्त आकणो के आधार पर राज्य सरकार संचालित संख्या = 05
अतः प्राप्त आकडो से निसकर्ष निकलता है। श्रवण बाधित बच्चो की शैक्षिक समस्या एक गम्भीर समस्या है।
उपराक्त सभी समस्याओं के कारण श्रवण बधिरतों में यह सभी सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती है जिस कारण समाज में समायोजन नहीं हो पाता है।
श्रवण बाधितों की मुख्य सामाजिक समस्या समाज में स्वंय को समायोजित करना है।
अतः अध्ययनों से यह पता लगाया जा सकता है कि सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा समायोजन श्रवण बाधितों की मुख्य सामाजिक समस्या है।
श्रवण बाधित विधार्थी अपनी विकलांगता के कारण समाज में सामाजिक समायोजन सम्प्रेषण करने, सांकेतिक भाषा में बातचीत करने तथा मनोरंजन करने के लिए सामान्य अन्य विधार्थियों के साथ सामन्जस्य बनाने में उपरोक्त समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण कई बार श्रवण बाधित बच्चें स्वंय को समाज की मुख्य धारा से अलग समझने लगते है तथा उनमे कुसमायोजना की समस्या उत्पन्न होने लगती है।

संदर्भ सूची

1. पाल सीताराम एंव भोला वी0 (2013) सगंम श्रवण एंव वाणी प्रबन्धन, नवीन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. जोसफ, आर0ए0 (2011) विशेश शिक्षा एंव पुनर्वास, समाकलन पब्लिशर्स, करौंदी, ब0एच0यू0, वाराणसी।
3. भार्गव महेश विशिसट बालक दिल्ली।
4. विश्व स्वास्थ संगठन